# संयुक्त परिवारों में परिवर्तन
# (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

रेडियो, टी.वी. मोवाईल इत्यादि साधनों की लोक प्रियता के नीवन सामाजिक अधिनियमों के ... सम्पत्ति संबंधी अधिकारों में व्यापक परिवर्तन हुए है, जिसके फलस्वरूप संयुक्त परिवारों के परम्परागत ... बनाए रखना असम्भव हो गया है।

संयुक्त परिवार के विघटन से जहाँ एक ओर अंधविश्वास रूढ़ियों एंव पारिवारिक संघर्षों में ... वहीं दूसरी ओर आर्थिक सामाजिक तथा पारिवारिक क्षेत्र में संयुक्त परिवार के विघटन ने अनेक विषम ... को जन्म दिया है। संयुक्त परिवारों के द्वारा स्वीकृत प्रथाओं, परम्पराओं एवं मूल्यों का प्रभाव समाप्त ... कारण ऐसा कोई आधार नहीं बचा है, जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहारों को नियंत्रित किया जा सके। ... के व्यवहारों में स्वछंदता, स्वतंत्रता, मनमानी आदि की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। आज इनको रोकने ... अनौपचारिक नियंत्रण नहीं है।

वर्तमान समय में संयुक्त परिवार के कार्यो में बहुत परिवर्तन है, किन्तु इन परिवारों के महत्व ... किया जा सकता। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य संयुक्त परिवार में परिवर्तन के कारणों एवं इसकी उपयोगिता ... पता लगाना है। अध्ययन में वर्णात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है, जिसके द्वारा परिवार के परम्परागत ... एवं आधुनिक स्वरूप को तथा उनके वर्तमान स्वरूप के कारणों का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन सागर जिले की खुरई तहसील के ग्राम निर्तला के 30 परिवारों को प्रतिदर्श के रूप में ... गया है। प्रतिदर्श के चयन में उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया। ततूपश्चात् साक्षात्कार अनुसूची ... जानकारी प्राप्त की गई है।

साहित्य सर्वेक्षण संयुक्त परिवार के बदलते स्वरूप के विषय में गीता आर्य ने दिनांक 24.07.2018 ... लेख में बताया है कि विवाह के स्वरूप में परिवर्तन से भी संयुक्त परिवार में सामंजस्य कम हुआ है। आपने ... अध्ययन में आधुनिकता, नगरीकरण, रोजगार हेतु पलायन, महत्वकांक्षा, स्वार्थवाद, घमण्ड, विचारों में असमानता ... को संयुक्त परिवार में विखण्डन एवं परिवर्तन का मुख्य कारण माना है।

सुश्री रेखा शुक्ला एवं डॉ. यू.पी. सिंह ने रीवा नगर के नगरीय परिवेश में "संयुक्त परिवार के बदलते प्रतिमान का एक सामाजिक अध्ययन" विषय पर लिखे गए शोध पत्र में बताया है कि, "संयुक्त परिवार ... सदस्यों के पारस्परिक संबंधों में औपचारिकता और कटुता का प्रवेश हो रहा है, जिसके कारण संयुक्त परिवारों ... विघटन देखने में आ रहा है।

संयुक्त परिवार के बदलते स्वरूप के कारणों को जानने के लिए सूचनादाताओं से निम्न प्रश्न पूछे ...

**सारणी क्र. - 01 - संयुक्त परिवार में सदस्यों की संख्या**

| क्र. | सदस्यों की संख्या | परिवार की संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | 5 या कम सदस्य | 12 | 40.00 |
| 2. | 06 से 10 सदस्य | 08 | 26.67 |
| 3. | 11 से 15 सदस्य | 06 | 20.00 |
| 4. | 16 से 20 सदस्य | 04 | 13.33 |
| | योग | 30 | 100.00 |

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अध्ययन किए गए संयुक्त परिवारों में 5 या कम सदस्यों वाले परिवार का प्रतिशत 40 पाया गया। 06-10 संख्या वाले परिवारों का प्रतिशत 26.67 पाया गया। 11-15 संख्या वाले परिवारों का प्रतिशत 20.00 है एवं 16-20 सदस्य संख्या वाले परिवारों का प्रतिशत 13.33 पाया गया। यह तथ्य इस बात की ओर संकेत करता है कि संयुक्त कहे जाने वाले परिवारों में भी सदस्यों की संख्या अपेक्षाकृत सीमित होती जा रही है।

**सारणी क्र. - 02 - संयुक्त परिवार में सदस्यों के संबंधों की घनिष्ठता में कमी का अध्ययन**

| क्र. | संबंधों में घनिष्ठता में कमी | परिवार की संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | व्यक्तिवादिता | 9 | 30 |
| 2. | पलायन | 5 | 16.6 |
| 3. | संबंधों में कटुता | 6 | 20 |
| 4. | अन्य कारण (महंगाई, स्वार्थ, महत्वाकांक्षा) | 10 | 33.3 |
| | योग | 30 | 100.00 |

सूचनादाताओं से पूछा गया कि संयुक्त परिवारों में सदस्यों के संबंधों में घनिष्ठता कम हो रही है। इसके क्या कारण हैं ? तत्संबंध में 30 प्रतिशत परिवार के सदस्यों का मानना है कि व्यक्तिवादिता के कारण घनिष्ठता में कमी आई है। 16.6 प्रतिशत परिवारों का मानना है कि पलायन के कारण भी घनिष्ठता कम हुई है। 20 प्रतिशत परिवार के के संदस्यों का कहना है कि संयुक्त परिवार में सदस्यों के संबंध में कटुता पैदा हो रही। सर्वाधिक 33 प्रतिशत लोगों का मानना है कि इन सबके अतिरिक्त ऐसे कई कारण (जैसे महंगाई, स्वार्थता, महत्वाकांक्षाएँ) है, जिसके कारण लोग अपने तक सीमित हो रहे हैं।

**सारणी क्र. - 03 - एक या अधिक पीढ़ी के सदस्यों के साथ-साथ रहने में सदस्यों की मनोवृत्ति /विचारों में परिवर्तन का अध्ययन**

| क्र. | मनोवृत्ति में परिवर्तन हुआ है | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | हाँ | 23 | 76.6 |
| 2. | नहीं | 07 | 23.3 |
| | योग | 30 | 100.00 |

उत्तरदाताओं से पूछा गया कि संयुक्त परिवार में दो या ज्यादा पीढ़ी के सदस्य एक साथ रहते हैं तो आपकी मनोवृत्ति या विचार में कोई अंतर आया है। तत्संबंध में 23 परिवारों ने यह स्वीकार किया हैकि हाँ हमारी मनोवृत्ति में परिवर्तन आया है। इसके विपरीत 07 परिवारों का मानना है कि उनकी मनोवृत्तियों में कोई परिवर्तन नहीं आया है एवं हम लोग इसके पक्ष में है।

**सारणी क्र. - 04 - संयुक्त परिवार में परिवर्तन के क्या कारण हैं**

| क्र. | कारण | परिवार संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | औद्योगिकीकरण/नगरीकरण | 03 | 10 |
| 2. | ग्रामीण क्षत्रें में रोजगार की कमी | 05 | 16.6 |
| 3. | व्यक्तिवादिता | 03 | 10 |
| 4. | परिवार की स्त्रियों में कलह | 02 | 6.6 |
| 5. | आवागमन के साधानों में उन्नति | 03 | 10 |
| 6. | उपरोक्त सभी | 14 | 46.6 |
| योग | | 30 | 100.00 |

उत्तरदाताओं से पूछा गया कि वर्तमान में संयुक्त परिवारों के विघटन के क्या कारण हैं। तत्संबंध में 10 प्रतिशत लोगों ने औद्योगीकरण एवं नगरीकरण को संयुक्त परिवार में परिवर्तन का मुख्य कारण माना क्योंकि औद्योगीकरण के कारण लोग नगरों की तरफ आकर्षित हुए जहाँ उन्हें रोजगार की उपलब्धता हुई। 16.6 प्रतिशत परिवारों का मानना है कि ग्रामीण क्षेत्रें में रोजगार की कमी हैं। 10 प्रतिशत परिवार में व्यक्तिवादिता को एक कारण मानते हैं। 6.6 प्रतिशत परिवारों का कहना है कि संयुक्त परिवार में स्त्रियों की कलह के कारण भी परिवार विघटित हो रहे हैं। वर्तमान समय में नगरों तथा आवागमन सुगम हो गया है, इसलिए लोग एकल परिवार के रूप में नगरों में रहना ज्यादा पसंद करते हैं।

सर्वाधिक 46 प्रतिशत परिवारों की राय में उक्त सभी कारण मुख्य होने के कारण संयुक्त परिवार खंडित हो रहे हैं।

**निष्कर्ष :**

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि अतीत में संयुक्त परिवारों का ढ़ांचा जिन विशेषताओं पर आधारित था उन सभी में आज तेजी से परिवर्तन हो रहा है। एक ओर संयुक्त परिवार वर्तमान युग की बदलती हुई आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ हैं, तो दूसरी ओर व्यक्तियों के विचारों और मनोवृत्तियों में इतना अधिक परिवर्तन हो गया है कि अब संयुक्त परिवार के परम्परागत स्वरूप को बनाए रखना कठिन हो गया है।

**संदर्भ :**

1. देसाई आई.पी. ''द जोइंट फैमिली इन इण्डिया'' सोसियोलाजिकल बुलेटिन।
2. आर्य गीता, ''संयुक्त परिवार में बदलते स्वरूप'' लेख दिनांक 27.07.2018।
3. कर्बे इरावति', किनशिप आर्गनाईजेशन इन इंण्डिया, पृष्ठ 10।
4. मुकर्जी रवीन्द्रनाथ, ''समाजशास्त्र'' शिवलाल अग्रवाल एण्ड सन्स, इन्दौर 2017।

❖ ❖ ❖